कहानी निर्माण प्रक्रिया और भाषा शिक्षण

मौअज़्ज़म अली

प्रक्रिया का परिचय एवं महत्व

शिक्षा में कहानी के महत्व और इस्तेमाल को लेकर शिक्षाविदों की राय एक सी है। बच्चों के साथ कहानी पर काम करने के लिए अलग-अलग तरह के प्रयोग किए गए हैं। कहानी सुनने-सुनाने बनाने की प्रक्रिया उनमें से एक है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बच्चों के सामने कहानी निर्माण की प्रक्रिया को इस तरह रखा जाता है कि बच्चों को लगता है कि वे कहानी सुन रहे हैं लेकिन असल में वे कहानी के निर्माण या रचने की प्रक्रिया में शामिल हो रहे होते हैं। भाषा शिक्षण के अंतर्गत जिस तरह कहानी सुनना-सुनाना एक रचनात्मक प्रक्रिया मानी जाती है, उसी प्रकार कहानी का निर्माण करना इससे भी बेहतर रचनात्मक प्रक्रिया कही जा सकती है। क्योंकि इसमें बच्चे सिर्फ कहानी सुनते हुए बहुत-सी मानसिक और भावनात्मक प्रक्रिया में शामिल ही नहीं होते बल्कि उनके पास इस कहानी के घटनाक्रम को अपने ढंग से आगे बढ़ाने का, जोड़ने-घटाने का, निर्णय लेने का, समाधान खोजने का रचनात्मक स्वामित्व भी हासिल होता है। वे केवल कहानी के घटनाक्रम, चरित्र और परिस्थिति से जुड़ाव ही नहीं बनाते बल्कि वे स्वयं इसके रचेता होते हैं। रचने का आनंद अपने आप में ही एक बड़ा आनंद माना जाता है। इस प्रक्रिया में कहानी के संसार का निर्माण बच्चों ने मिलकर स्वयं किया होता है तो इससे व्यक्तिगत रूप से भी और सामूहिक तौर पर भी आनंद की अनुभूति का अहसास होता है। इससे बच्चे व्यक्तिगत तौर पर रचनात्मक संतुष्टि का अनुभव तो करते ही हैं, साथ ही यह एक सामूहिक प्रक्रिया होने के कारण इससे उनमें सामूहिकता और सामाजिकता की भावना के विकास में भी मदद मिलती है। इससे वे एक-दूसरे को अपने संसार में झांकने और दखल देने की अनुमति देते भी है और लेते भी हैं, जिससे उनमें आपसी समझ और आत्मीयता की भावना का विकास होने की संभावना बढ़ती है जोकि आगे चलकर उनमें समानुभूति की भावना का विकास करने में सहायक हो सकता है। वर्तमान सामाजिक संदर्भ में इसकी बहुत आवश्यकता दिखाई देती है।

अनुभवानुसार, जब बच्चों से कक्षा में कहानी निर्माण की किसी भी एक प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए सीधे कहा जाए कि चलो कहानी बनाओ या हम मिलकर कहानी बनाते हैं तो अक्सर बच्चे इस प्रक्रिया में प्रतिभाग करते हुए झिझकते-शरमाते-संकोच करते दिखाई देते हैं। अगर बच्चे इसमें प्रतिभाग करते भी हैं तो भी कहानी के घटनाक्रम को आवश्यक क्रमबद्धता नहीं दे पाते या अपनी बात को ठीक से रख नहीं पाते। लेकिन जिस प्रक्रिया का यहां जिक्र किया जा रहा है अगर शुरुआती स्तर पर कक्षा में इस को अपनाया जाए तो बच्चों को (विशेषकर छोटे बच्चे) मालूम ही नहीं पड़ता कि वे असल में कहानी सुन नहीं रहे हैं बल्कि बना रहे हैं और इस अनभिज्ञता में भी वे रचनात्मक प्रक्रिया के अंतर्गत अपने एक संसार का निर्माण कर रहे होते हैं जिससे उनके बहुत से कौशलों जैसे- मौखिक एवं स्वतंत्र अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, रचनात्मकता, सोचने-विचारने, सामूहिकता और सामाजिकता की भावना, सुनने की क्षमता, निर्णय लेने एवं समाधान खोजने

की क्षमता आदि का विकास हो रहा होता है स लेकिन यह केवल एक शुरुआती प्रक्रिया है जोकि vygotsky की 'scaffolding' या 'More Knowledgable Other' के सिद्धांतों के अंतर्गत देखी जा सकती है जिसमें शुरुआती स्तर पर एक शिक्षक किसी कौशल को विकसित करने में बच्चों की मदद करता है ताकि आगे चलकर वे स्वयं इस कौशल को विकसित करते हुए स्वयं कहानी की रचना कर सकें या कहानी रचने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें।

इसके साथ ये भी जरूरी है कि बच्चों को कक्षा में अधिक से अधिक कहानी पढ़ने और सुनने के भी अवसर उपलब्ध कराए जाएं ताकि कहानी के बारे में उनकी समझ के दायरे का विस्तार हो सके और वे कहानी की संरचना को समझते हुए बेहतर कहानी निर्माण की प्रक्रिया में शामिल हो सके। कहानी निर्माण की प्रक्रिया में शामिल होने से इस बात की संभावना और बढ़ सकती है कि बच्चों में किताबें पढ़ने और लिखने की इच्छा का भी विकास हो। असल में कहानी निर्माण अभिव्यक्ति की एक प्रक्रिया है जो बच्चों की मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति के विकास में सहायक हो सकती है क्योंकि जब बच्चे कहानी रचते हैं तो शिक्षक इस कहानी को बोर्ड पर या कॉपी पर लिख सकते हैं और फिर इस कहानी को बच्चों को दुबारा पढ़कर सुना सकते हैं। फिर बच्चों को इसको पढ़ने के लिए कह सकते हैं और लिखने के लिए भी।

जब बच्चे कहानी निर्माण की किसी भी प्रक्रिया में प्रतिभाग करते हैं तो वे एक-एक वाक्य जोड़ते हुए कहानी निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं। वे जो भी शब्द या वाक्य बोलते हैं इससे उनके अनुभवों, संदर्भों और दुनिया को देखने के नजरिए का पता चलता है। इससे आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि कोई बच्चा या बच्चों का समूह किस पृष्ठभूमि से संबंध रखता है? उनका सोचने का तरीका क्या है? उनके अनुभव और संदर्भ क्या हैं? क्योंकि अपने अनुभवों और संदर्भों के अनुसार ही वे अपनी कल्पनाओं, विचारों को सामने रखते हैं। इससे शिक्षक को बच्चे की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को बेहतर रूप से समझने में मदद मिलती है जोकि शिक्षक को बच्चों के अनुसार प्रभावकारी शिक्षण योजना और शिक्षण पद्धति अपनाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

कक्षा में कहानी सुनाने-बनाने की प्रक्रिया का एक उदाहरण

(एक ही कक्षा में बैठने वाले कक्षा एक और दो के 22 बच्चे अर्थात 6 से 7 वर्ष के तक आयुवर्ग के साथ का कक्षा कार्य का एक अनुभव और उसका समीक्षात्मक विश्लेषण एवं निष्कर्ष)

मैं कक्षा के एक कोने में दरी पर दीवार से टेक लगाकर बैठ गया और बच्चों से पूछा कि 'क्या मैं आपसे कुछ बात कर सकता हूं?' सभी बच्चों ने हामी भरी और तीन तरफ मेरे इर्द-गिर्द आकर बैठ गए। पहले हम सभी ने एक-दूसरे को अपना नाम बताया फिर मेरे पूछने पर कि कहानी सुनना किस-किस को पसंद है तो सभी ने अपना हाथ उठा लिया। फिर पूछा की कहानी सुनाना किसको पसंद है तो तीन-चार बच्चों ने ही अपना हाथ उठाया। फिर ये पूछने पर कि, 'क्या आप कहानी सुना सकते हो हम सभी को?' अधिकतर बच्चों ने मछली जल की रानी जैसी कवितायें सुनाई। इस पर सुजल नाम के बच्चे ने बोला, 'ये सभी कविताएं है कहानी नहीं है।' मेरे मन में आया कि क्या इनसे कहानी और कविता के अंतर पर बात की जाए, देखते हैं ये इस बारे में क्या सोचते हैं? मगर मैंने अभी इसको रहने ही दिया। फिर सुजल ने स्वयं शेर-और बकरी की छोटी-सी कहानी सुनाई। उसके बाद भी कुछ बच्चों ने कविताएं सुनाई। दुबारा पूछने पर इस बार कोई और बच्चा कहानी सुनाने को आगे नहीं आया तो मैंने पूछा, 'क्या मैं आपको एक कहानी सुनाऊं?'। सभी बच्चों ने इजाजत दे दी तो मैं उनको कहानी सुनाने लगा। मेरा मतलब है बनाने लगा या यूं कहिये कि कहानी सुनाते हुए कहानी निर्माण का काम चलने लगा।

मैंने पूछा, 'कौन सी कहानी सुनोगे', तो बच्चों ने कहा 'राजा की।'

मैंने कहा 'ठीक है।'

एक राजा था, वो क्या करता था?

बच्चे : काम करता था।

क्या काम करता था?

बच्चे : झाड़ू-पोछे का काम करता था - बर्तन धोने का काम करता था - घर बनाने का काम करता था...

अच्छा ठीक है राजा घर बनाने का काम करता था, फिर...

बच्चे : एक दिन राजा घर बना रहा था तो बहुत तेज हवा चली और घर गिर गया।

फिर क्या हुआ?

बच्चे : राजा अपने घर का सामान समेटने लगा : ईंट-गारा सब कुछ - फिर उसने एक नया घर बनाया - सोने का घर।

क्या! सोने का घर। उस घर में कौन-कौन रहता था?

बच्चे : उसकी सास रहती थी - पत्नी भी रहती थी - एक बेटा भी रहता था - और सिपाही रहते थे।

फिर क्या हुआ?

बच्चे : एक दिन सिपाही छत पर गया - उसने एक चमकती हुई चीज देखी।

वो क्या चीज होगी?

बच्चे : खजाना देखा - शायद हीरा होगा - नहीं-नहीं नागमणि होगी, वही चमकती है।

फिर पता है क्या हुआ?

बच्चे : क्या हुआ?

सोचो क्या हुआ होगा?

बच्चे : सिपाही ने ये बात जाकर राजा को बताई।

हां सिपाही ने ये बात राजा को बताई। फिर राजा ने क्या किया?

बच्चे : राजा छत पर सिपाही के साथ उस चीज को देखने गया।

क्या राजा को समझ में आया कि वो चीज क्या है?

बच्चे : राजा सोच रहा था कि ये कोई खजाना है या हीरा है या फिर नागमणि ही है।

फिर क्या हुआ होगा?

बच्चे : सिपाही और राजा घोड़े पर बैठकर उसको देखने के लिए जाते हैं।

वो जितना उस चीज के पास जाते हैं...

बच्चे : वो चीज उनसे दूर होती जाती है।

वो जितना और पास जाते हैं,

बच्चे : वो चीज और भी दूर होती जाती है।

फिर पता है क्या हुआ? सोचो क्या हुआ होगा?

बच्चे : राजा और सिपाही घोड़े से नीचे उतर गए - छुप-छुपकर जाने लगे - पेड़ों के पीछे छुपकर - घरों की दीवार के पीछे छुपकर।

वो छिपकर क्यों जा रहे थे?

बच्चे : ताकि वो चीज उनको देख न पाए - उनको देखकर दूर न जा पाए।

फिर क्या हुआ?

बच्चे : फिर वे उस चीज के पास पहुंच गए।

अरे ये क्या राजा और सिपाही ने जो सोचा था ये तो वो चीज नहीं थी। ये तो कुछ और ही चीज थी। सोचो वो

चीज क्या हो सकती है?

बच्चे : वो तो गदा था - हां हनुमान जी का गदा।

हनुमान जी का गदा यहां क्या कर रहा था?

बच्चे : शायद हनुमान जी इसको यहां भूल गए थे - नहीं-नहीं ये उनसे गुम हो गया था - हनुमान जी इसको ढूंढ रहे थे।

फिर क्या हुआ होगा? क्या वो हनुमान के गदे के पास गए?

बच्चे : हां वो उस गदे के पास जाने लगे।

अरे रुको जानते हो तभी क्या हुआ?

बच्चे : क्या हुआ?

राजा और सिपाही को वहां कोई दिखाई दिया। कौन दिखाई दिया होगा?

बच्चे : वहां हनुमान का एक भक्त था।

वो क्या कर रहा था?

बच्चे : मंत्र पढ़ रहा था - हनुमान चालीसा पढ़ रहा था।

तभी जानते हो क्या हुआ?

बच्चे : क्या हुआ?

सोचो क्या हुआ होगा जब वो बहुत देर से हनुमान चालीसा पढ़ रहा होगा?

बच्चे : वहां हनुमान जी आ गए।

कहां से आ गए?

बच्चे : ऊपर से - आसमान से - धीरे-धीरे नीचे उतरे।

फिर पता है उन्होंने भक्त से क्या पुछा?

बच्चे : हनुमान जी ने भक्त से अपने गदे के बारे में पुछा।

फिर भक्त ने क्या कहा? क्या भक्त को पता होगा उस गदे के बारे में?

बच्चे : नहीं।

फिर किसने उनको बताया होगा?

बच्चे : राजा और सिपाही हनुमान जी के पास गए - उनको गदे के बारे में बताया।

फिर हनुमान जी ने क्या कहा?

बच्चे : मेरा गदा गुम हो गया था।

फिर क्या हुआ?

बच्चे : हनुमान जी गदा पाकर खुश हो गए।

फिर क्या हुआ होगा? हनुमान जी ने क्या कहा होगा?

बच्चे : मैं अपना गदा वापस पाकर बहुत खुश हूं।

फिर क्या हुआ?

बच्चे : हनुमान जी ने कहा, तुमने मेरी मदद की जाओ और हमेशा खुश रहो।

फिर क्या हुआ?

बच्चे : हनुमान जी अपने भक्त के साथ वहां से चले गए।

राजा और सिपाही के साथ क्या हुआ?

बच्चे : वो दोनों अपने महल चले गए और हमेशा खुशी-खुशी रहने लगे।

कैसी लगी ये कहानी?

बच्चे : बहुत अच्छी

सभी को कहानी याद है?

बच्चे : हां

ऐसा करना अपने सर को भी ये पूरी कहानी सुनाना। ठीक है, सुनाओगे न?

बच्चे : हां सुनाएंगे

फिर मैंने शिक्षक की उपस्थिति में इस कहानी को बच्चों की मदद से बोर्ड पर लिखा और उनको फिर से इस कहानी को पढ़कर सुनाया। इसके बाद बच्चों को अंदाजा लगाकर पढ़ने को कहा और फिर उनको इस कहानी को अपनी-अपनी कॉपी में लिखने को कहा। जब बच्चे कॉपी में इस कहानी को उतार रहे थे तो शिक्षक से इस विषय पर बात हुई कि वह अगले दिन बच्चों द्वारा निर्मित इस कहानी पर चित्र बनवा सकते हैं और उन चित्रों पर बच्चों से बात की जा सकती है कि किस बच्चे ने कहानी की कौन सी घटना या दृश्य का चित्र बनाया है और क्यों? साथ ही वह रोजाना बच्चों को कोई कहानी पढ़कर सुनाएं और कम से कम हफ्ते में एक बार इस तरह की कहानी निर्माण की प्रक्रिया में बच्चों को शामिल करें। आगे चल कर कहानी निर्माण की अन्य प्रक्रियाओं को भी क्रमबद्ध रूप से शामिल किया जा सकता है जैसे - बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों पर कहानी निर्माण, किसी एक शब्द या शब्दों के इर्द-गिर्द कहानी निर्माण, वास्तविक घटनाओं को कहानी में ढालना, किसी अधूरी कहानी को आगे बढ़ाना आदि।

इस प्रक्रिया का विश्लेषण करने पर अगर बच्चों के अनुभवों, उनकी पृष्ठभूमि, संदर्भ आदि की बात की जाए तो ये बात निकलकर सामने आती है कि बच्चों ने एक ऐसे राजा की बात या कल्पना की जो झाड़ू-पोछा लगाने का काम करता है और घर बनाने का काम करता है स बच्चों से बात करने के बाद ये बात निकलकर आई कि उनकी माएं दूसरों के घरों में झाड़ू-पोछा-बर्तन का काम करती हैं और अधिकतर बच्चों के पिता या तो किसी के यहां साफ-सफाई या राज मिस्त्री का काम करते हैं। उनके इसी अनुभव ने इस कहानी को आधार दिया और हमारे सामने एक ऐसे राजा की अवधारणा सामने आती है जो झाड़ू-पोछे का काम करता है और घर बनाने का काम करता है। क्योंकि अपने पारिवारिक वातावरण में उन्होंने अधिकतर लोगों को इन्हीं कामों को करते देखा है। इसमें उन्होंने अपने घर और समाज के संदर्भों को सामने रखा। ये बात सही भी है कि बच्चे ही क्या बड़े भी अपने अनुभवों और संदर्भों से बाहर की किसी बात की कल्पना नहीं कर सकते।

दूसरी तरफ बच्चों के पास शायद ये अवधारणा भी है कि राजा एक ऐसा प्राणी है जोकि बहुत ताकतवर होता है और जिसका महल होता है। उन्होंने राजा द्वारा अपने हाथों से एक सोने का महल बनाने की बात की जोकि पेशे के तौर पर घर बनाने का काम करता है। सोने का महल इसलिए क्योंकि बच्चों से बातचीत के आधार पर यह बात निकलकर आई कि उन्होंने अपने घरों में अपनी मां से यह बात सुनी है कि काश, उनके पास भी सोने के जेवर होते, लेकिन ऐसे जेवर तो केवल अमीर लोगों के पास ही होते हैं क्योंकि वे बहुत महंगे होते हैं जिनको अमीर लोग ही खरीद और पहन सकते हैं, और दुनिया की सबसे महंगी चीज सोना होती है और एक राजा ही सबसे अमीर होता है।

इसी प्रकार बच्चों द्वारा इस प्रक्रिया में अन्य शब्दों और अवधारणाओं के इस्तेमाल को भी समझा जा सकता है जैसे सिपाही, खजाना, नागमणि, हनुमान, भक्त आदि।

कहानी ''सुनने-सुनाने-बनाने'' की इस प्रक्रिया पर गौर करें तो पाएंगे कि इसमें घटनाक्रम में एक क्रमबद्धता दिखाई देती है जबकि ये बच्चे पहल बार इस तरह की प्रक्रिया में शामिल हो रहे थे। कहानी के घटनाक्रम में आपस में जुड़ाव रहे इसके लिए शुरुआती स्तर पर शिक्षक को खासतौर से अपनी तरफ से ये जुड़ाव बनाने के लिए प्रयासरत रहना

होगा और बच्चों से लगातार इस पर बात करनी होगी। बाद में बच्चे स्वयं इस क्रमबद्धता को बनाये रख पाएंगे। लेकिन इससे भी पहले एक शिक्षक को ये मालूम होना चाहिए कि एक कहानी को कहानी होने के लिए किन विशेष तत्वों की आवश्यकता होती है। कहानी निर्माण की प्रक्रिया केवल कहानी रचने तक ही सीमित नहीं रहती है बल्कि यह अभिव्यक्ति का एक माध्यम होने के कारण बच्चों को लिखने और चित्र बनाने के लिए भी प्रेरित करती है। बच्चों में लिखने का कौशल विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि उनमें पढ़ने का कौशल भी विकसित हो। यह प्रक्रिया बच्चों में पढ़ने-लिखने की आदत का विकास करने में उपयोगी हो सकती है।

इस प्रकार भाषा की कक्षा में पढ़ना-लिखना-अभिव्यक्ति-रचनात्मकता-कल्पनाशीलता आदि प्रक्रियाएं समग्र रूप से चलती हैं जो बच्चे के सीखने और समझ को और समृद्ध बनाती है। इनको किसी क्रमबद्धता में नहीं बांधा जा सकता। शैक्षिक और विशेष रूप से भाषा शिक्षण के नजरिए से देखा जाए तो इन सारी प्रक्रियाओं का अपना महत्व है।

इस प्रक्रिया में दो-तीन बच्चों को छोड़कर सभी बच्चों ने कम से कम एक पंक्ति तो अपनी तरफ से जोड़ने की कोशिश की थी। ये बात और है कि मेरे द्वारा यह खास कोशिश की गई थी कि सभी बच्चे इस कहानी में अपनी मौखिक और वाक्यात्मक प्रतिभागिता रखें और ऐसा हुआ भी। एक शिक्षक के तौर पर इस बात पर नजर रखना जरूरी है कि कक्षा के सभी बच्चे कक्षा में होने वाली किसी भी प्रक्रिया में किसी न किसी रूप में प्रतिभाग करें। जो बच्चे बोलकर प्रतिभाग नहीं कर पाए, उनके लिए ये कोशिश की गई कि वे बच्चों द्वारा बोली गई बातों को सुनने और उसको दोहराने में अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित करें। अकसर यह सुनने में आता है कि कक्षा में फलां बच्चे बहुत कोशिश करने के बाद भी फलां प्रक्रिया में शामिल नहीं हो पाते हैं और सारा ठीकरा बच्चों या अभिभावकों या उनकी पृष्ठभूमि के सर पर फोड़ने की कोशिश की जाती है। मेरा मानना है कि ऐसा करते हुए हम बच्चों को किसी प्रक्रिया में शामिल न कर पाने की एक शिक्षक के तौर पर अपनी कमजोरी को छिपाने की कोशिश करते हैं जबकि हम बखूबी जानते हैं हर बच्चा सीख सकता है, यह बात और है कि सभी की सीखने की अपनी-अपनी गति और तरीका होता है। इस बात को समझना बहुत आवश्यक है, तभी हम कक्षा में बच्चों के साथ बेहतर काम कर पाएंगे और उसके अपेक्षित परिणाम प्राप्त कर पाएंगे। ◆

लेखक परिचय : 1993 से शैक्षिक रंगमंच से जुड़े हैं। 2012 से अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड में ड्रामा इन एजुकेशन विषय के संदर्भ व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं।

संपर्क : 9456591361; moazzam.ali@azimpremjifoundation.org